United Nations

WORLD ENVIRONMENT DAY June 5

विश्व पर्यावरण दिवस

World Environment Day 2022

5th JUNE 2022

पृथ्वी एक है

Only One Earth

पर्यावरण के प्रति जागरुकता हेतु विश्व पर्यावरण दिवस, 2022 के अवसर पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा दिनांक 05.06.2022 को आभासीय मंच के माध्यम से “धरती एक है” विषय पर एक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि वक्ता डा. अंशुमाली, Professor, Indian Institute of Technology (IIT), Dhanbad ने भूमि ह्रास एवं जल संरक्षण पर विशेष व्याख्यान दिया जिसमें संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी, समूह समन्वयक (अनुसंधान), डा. योगेश्वर मिश्रा, डा. शरद तिवारी, वैज्ञानिक –जी तथा उप वन संरक्षक, श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की के अलावा संस्थान के अन्य वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं शोधकर्मियों ने भाग लिया।

“जीवन के लिए धरती के अलावा कोई वैकल्पिक ग्रह नहीं है” की चेतावनी देते हुए उप वन संरक्षक श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की ने मुख्य वक्ता डा. अंशुमाली के साथ-साथ निदेशक, समूह समन्वयक (अनुसंधान) सहित समस्त प्रतिभागियों का कार्यक्रम में स्वागत किया एवं निदेशक महोदय का औपचारिक स्वागत करते हुए कार्यक्रम के विषय में संक्षिप्त संदेश देने का आग्रह किया।

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने पर्यावरण के ह्रास के लिए सिर्फ और सिर्फ मानव जाति को जिम्मेवार बताया। उन्होनें कहा प्रकृति के प्रति मानवीय अपराध ने आज धरती को विनाश की ओर धकेल दिया है जिसके लिए विश्व समुदाय खासकर युवाओं को जागरुक करने की आवश्यकता है। अपनी आदतों को सुधार कर युवाओं को जन स्वास्थ्य, ओजोन परत, वन दोहन, वैश्विक तापन के प्रति सचेत करने की जरुरत है। कोरोना काल का उदाहरण देते हुए उन्होनें बताया कि लाक-डाउन के समय हुए प्राकृतिक सुधार से यह साफ जाहिर है कि हम यदि प्रयास करे को प्राकृतिक विनाश लीला को रोका जा सकता है, पर्यावरण में सुधार संभव है। लाक डाउन के समय सबसे प्रदूषित यमुना नदी भी स्वच्छता के ओर अग्रसर हुई , गलियों, चौबारों पर चिड़िया की चहक सुनाई पड़ी, प्लास्टिक सड़कों से गायब मिली। तात्पर्य यह है कि आदतों में सुधार कर पर्यावरण में सुधार संभव है। भारत सरकार, वन मंत्रालय, परिषद एवं वन उत्पादकता संस्थान, रांची इसी प्रयास में आज का कार्यक्रम आयोजित कर रही है। प्रख्यात पर्यावरण विद, डा. अंशुमाली, Professor, IIT, Dhanbad को इस कार्यक्रम में समय देने के लिए उनका स्वागत करता है।

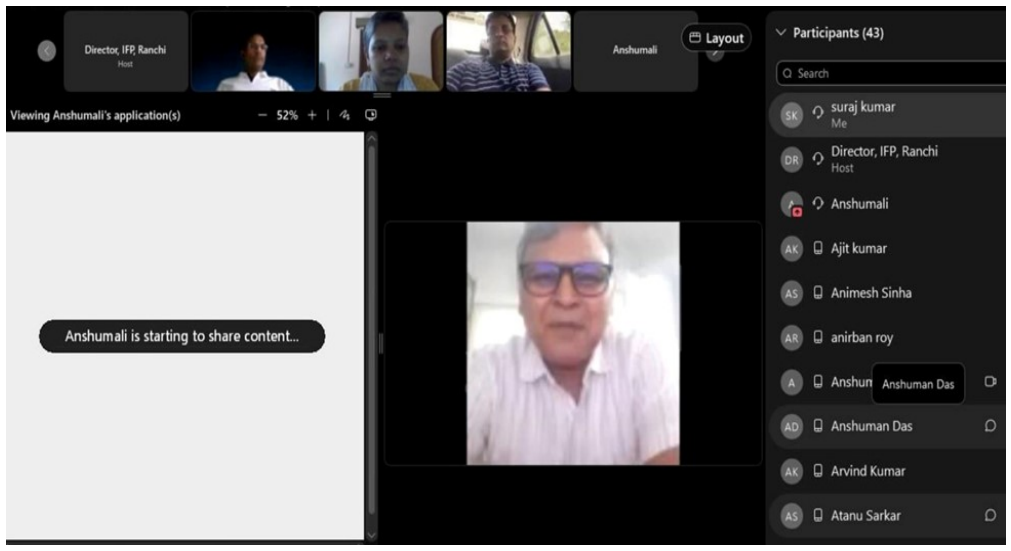

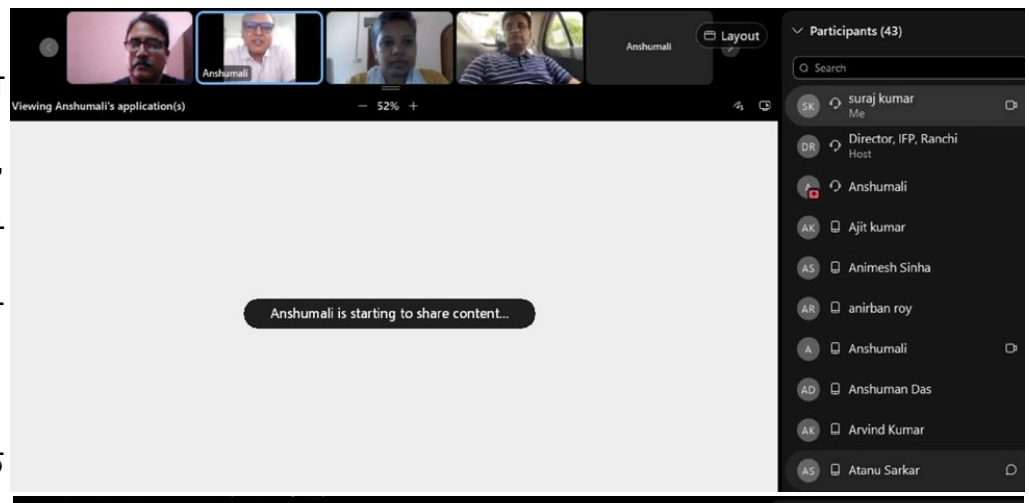

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

(वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार)

कार्यक्रम के अतिथि वक्ता डा. अंशुमाली, Professor, IIT, Dhanbad ने कहा कि आज का दिन विश्विक स्तर पर आज का दिन काफी महत्व का हो जाता हैं क्योंकि जिस खतरे से हम दो-चार हो रहे हैं वह हमारे द्वारा की गई अपराध का नतीजा है। उन्होने खास कर भूमि विविधता को महत्वपूर्ण बताते हुए भूमि विविधता और जल श्रोत के संबंधो को विस्तार से प्रस्तुत किया। उन्होनें बताया कि प्रत्येक जीव-जंतु उपरी सतह पर निर्भर है। जलवायु परिवर्तन का सीधा संबंध भी जमीन की उपरी सतह से होता है और भूमि की विविधता जैव विविधता को संतुलित करती है। उन्होने जोर देकर कहा कि भूमि विविधता संरक्षण कर इस पारिस्थितिकी तंत्र को सुदृढ़ कर सकते है। बड़ी नदियों को सुरक्षित करने से पहले हमे छोटी-छोटी नदियों, नालों, झरनों आदि को सुरक्षित करना होगा। हाथी, बाघ, हाटस्पाट आदि का दस्तावेजीकरण आवश्यक है। नदी नाले वन पर काफी प्रभाव डालते है। वन पर्यावरण संरक्षण का एक अहम हिस्सा है। विकास की अंधी दौड़ में कंक्रीटों ने भूमि विविधता को क्षतिग्रस्त तो किया ही हमारे वनों का भी तेजी से ह्रास हुआ। यह भावी पीढ़ी के लिए बड़ा खतरा है। उन्होनें ग़्लास्गो सम्मेलन का भी चर्चा किया। वर्षों के प्राकृतिक विघटन प्रयास से निर्मित मृदा को अंधाधुन्ध उपयोग किया गया। इट निर्माण भी पर्यावरण परिवर्तन के कारणों में से एक है। प्राथमिक मृदा निर्माण हमारे कार्यसूचि में है। मिट्टी निर्माण के लिए पहाड़ का होना आवश्यक है। उन्होने झारख़ंड की पारिस्थितिकी को भी विस्तार से बताया। उन्होने बताया कि जलस्तर 10’ की तुलना में 300’ नीचे चला गया है। झारख़ंड की भूमि विविधता को उत्तम बताते हुए पौधरोपण, पहाड़ दोहन रोककर हम एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं। उन्होनें युवाओं को भावनात्मक रुप से प्रकृति से जोड़ने का कार्यक्रम चलाने पर जोर दिया एवं प्रशासनिक क्षेत्र निर्धारण को आवश्यक बताया।

श्रीमती अंजना सूचिता तिर्की द्वारा उठाए गए चेक डैम संबंधी आशंका को उन्होने सरलता से निराकरण किया और चेक डैम बनाने से पहले योजना बनाना आवश्यक है।

डा. योगेश्वर मिश्रा द्वारा उठाए गए फंडिग एजेंसियों (Funding Agencies) एवं स्वर्णरेखा नदी तथा दामोदर नदी DPR पर भी चर्चाएं हुई। डा. शरद तिवारी द्वारा बताए जाने पर कि “सैकड़ो साल में जो सिस्टम बन पाती है, चुटकी बजाते हीं खत्म कर दी जाती है। डा. अंशुमाली ने कहा कि हमे ग्रामीण स्तर पर कार्य करना होगा। स्थानीय स्तर पर सूक्ष्म सिचाई द्वारा ग्रामीणों की भागीदारी, वानिकी से ग्रामीणों को जोड़ना- जमीन जोती जमीन बचाओं (LULC) जैसे कार्यक्रमों को प्रोत्साहित कर छोटे-छोटे वानिकी क्षेत्र को नदियों, जलवायु और खेती से जोड़कर समस्या को कम किया जा सकता है। उन्होने पुन: कहा कि देश की आत्मा गावों में बसती है अत: गावों को मजबूत करें।

कार्यक्रम समापन के पूर्व श्रीमती अंजना सुचिता तिर्की ने प्रतिभागियों को पर्यावरण सुधार के लिए जन-जन तक संपर्क की अपील की।

डा. योगेश्वर मिश्रा ने कार्यक्रम को काफी सफल बताया। उन्होने पर्यावरण सुरक्षा हेतु कथनी एवं करनी को एक बनाने की अपील की। कुछ ज्वलंत उदाहरणों को कार्यक्रम में रखकर प्रेरणा लेने की अपील की एवं डा. नितिन कुलकर्णी, निदेशक के तत्पर निर्णय, प्रतिभागियों के उत्साह, विस्तार प्रभाग की व्यवस्था, सूचना तकनीकी प्रभाग आदि का योगदान के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया एवं कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की।

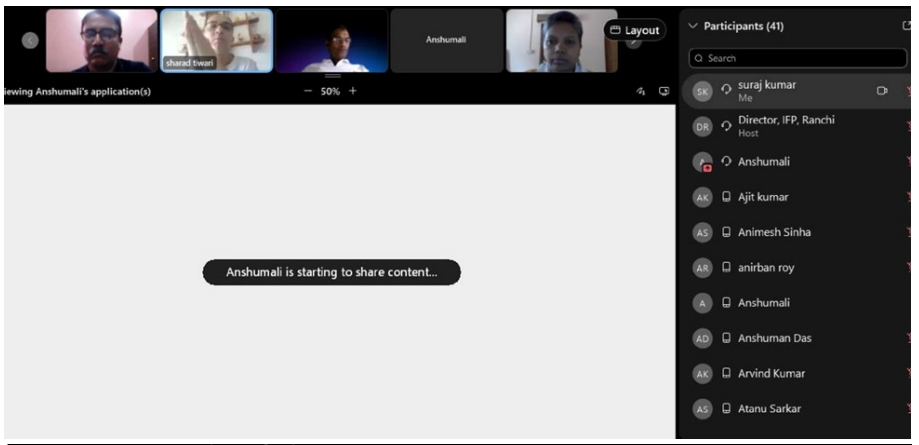

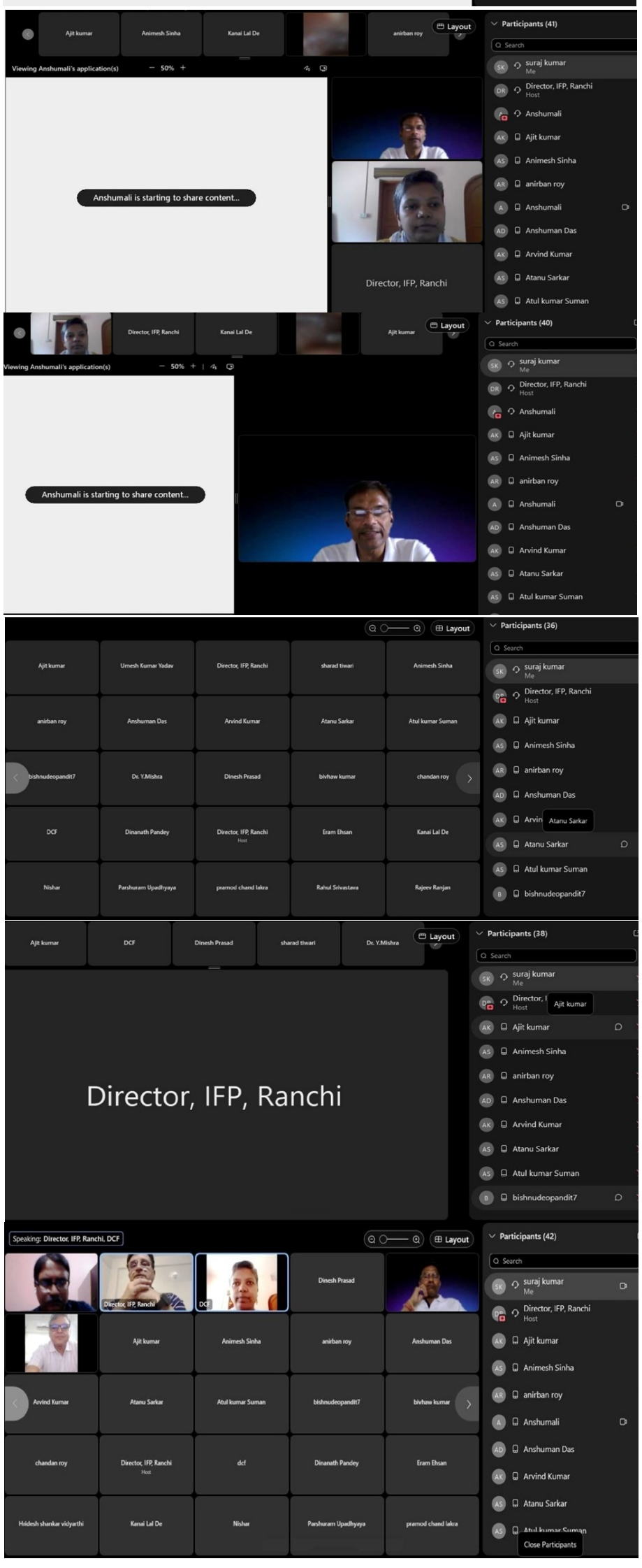

वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)